प्राथमिक शिक्षा पाठ्यचर्या - २०१२

भाषा भाग - २

कक्षा ५ वीं से ८ वीं

विषय : हिंदी (द्वितीय भाषा) संयुक्त

प्राथमिक शिक्षा पाठ्यचर्या - २०१२

भाषा भाग - २

इयत्ता ५ वीं से ८ वीं

विषय : हिंदी (द्वितीय भाषा) संयुक्त

अनुक्रमणिका

अ. क्र.		पृष्ठ
१.	प्रस्तावना	२८५
२.	सामान्य उद्देश्य	२८७
३.	विशिष्ट उद्देश्य	२८७
४.	पाठ्यक्रम	
	पाँचवीं	२८९
	छठी	३०३
	सातवीं	३१७
	आठवीं	३३३
५.	अध्ययन–अध्यापनसंबंधी निर्देश	३४९
६.	मूल्यांकनसंबंधी सामान्य निर्देश	३५१
७.	उपसंहार	३५२

प्राथमिक शिक्षा पाठ्यचर्या २०१२

इयत्ता - ५ वीं से ८ वीं

विषय - हिंदी (द्वितीय भाषा) संयुक्त

प्रस्तावना

भारत विविध संस्कृतियों से समृद्ध एक विशाल देश है। अनेक भाषाएँ, बोलियाँ, रीति–रिवाज, रहन–सहन, खान–पान इसकी विशेषता है। बहुक्षेत्रीय, बहुभाषी तथा बहुआयामी देश की सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक एवं व्यावसायिक आवश्यकताएँ भी विभिन्न प्रकार की हैं। विविधता में एकता इस देश की गौरवशाली परंपरा है। इस बहुभाषी देश में आंतरप्रांतीय संपर्क, विचारों के आदान–प्रदान, राष्ट्रीय एवं भावनात्मक एकात्मता, संवैधानिक मूल्यों को सुसंगत ढंग से सँजोए रखना आवश्यक है। इस आवश्यकता की संपूर्ति हेतु हिंदी सशक्त एवं समर्थ भाषा है।

हिंदी मध्ययुग से ही आंतरप्रांतीय संपर्क की भाषा रही है। महाराष्ट्र के कुछ संतों ने मराठी के साथ–साथ हिंदी में भी रचनाएँ की है। स्वतंत्रता संग्राम के दिनों में आंतर्प्रांतीय संपर्क की भाषा के रूप में हिंदी की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। भारतीय संविधान के अनुसार हिंदी भारतीय गणराज्य की राजभाषा रही है। हिंदी को पढ़ना संवैधानिक तथा व्यावहारिक आवश्यकता है। इन बातों को दृष्टिगत रखते हुए 'महाराष्ट्र राज्य अभ्यासक्रम २०१०' के प्रारूप में हिंदी को द्वितीय (संपूर्ण एवं संयुक्त) भाषा के रूप में कक्षा पाँचवी से रखा गया है।

लिपि, शब्द–भंडार और वाक्य रचना की दृष्टि से मराठी, गुजराती और अन्य भारतीय भाषाओं से हिंदी की समीपता के कारण तथा प्रचार–प्रसार के अन्य माध्यमों के प्रभाव से किसी–न–किसी रूप में कक्षा पाँचवीं में आनेवाले विद्यार्थी हिंदी से थोड़ा–बहुत परिचित रहते हैं। अतः हिंदी उनके लिए सहज, सरल, सुगम एवं पूर्व परिचित भाषा है।

इन विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए पाठ्यक्रम बनाते समय जिन बिंदुओं का समावेश किया गया है, वे निम्नानुसार हैं –

विद्यार्थियों को मातृभाषा जगत से हिंदी–विश्व में ले जाते हुए उनकी शारीरिक, मानसिक, भावनिक एवं सामाजिक आवश्यकताओं को अंतर्भूत किया गया है। २००५ के राष्ट्रीय पाठ्यचर्या ढाँचे (NCF) में भाषा शिक्षा के संदर्भ में दिए गए निर्देशों का ध्यान रखा गया है। इसी तरह आर.टी.ई.के निर्देश भी ध्यान में रखे गए हैं। अध्ययन–अध्यापन प्रक्रिया में विद्यार्थियों के भाषिक कौशलों के आकलन, उपयोजन, सर्जनशील प्रयोग आदि क्षमताओं के विकास को विशेष महत्व दिया गया है। ज्ञानरचनावाद का ध्यान रखते हुए पाठ्यक्रम पूर्णतः बाल– केंद्रित बनाया गया है। पाठ्यक्रम में यथास्थान परिसर अध्ययन को समाविष्ट करते हुए जीवन कौशलों के विकास का पूरा ध्यान रखा गया है। लिंग समभाव के तत्त्व एवं मूल्यशिक्षा को पाठ्यक्रम में यथोचित स्थान देते हुए केंद्रीय आधारभूत तत्त्वों का भी समावेश किया गया है। पाठ्यक्रम में जगह–जगह अत्यंत स्वाभाविक ढंग से भाषा के साथ अन्य विषयों का तालमेल बिठाया गया है। साथ ही इस बात का भी विचार किया गया है कि रोचक शिक्षा में कहीं भी बाधा न आए। यह सब

करते हुए विद्यार्थियों का निरंतर एवं सर्वांगीण मूल्यांकन भी होता रहे, इस बात का भी ध्यान रखा गया है। परीक्षा पद्धति को अधिक सरल, सहज, सुगम एवं लचीला बनाया गया है।

इस पुनर्रचित नवीन पाठ्यक्रम में जहाँ एक ओर जनतांत्रिक नीति, योजना को प्राधान्य दिया गया है, रटने की पद्धति का परित्याग किया गया है, वहीं दूसरी ओर पारंपरिक भारतीय शिक्षा तंत्रों के प्रयोग पर भी ध्यान रखा गया है। जनसंख्या शिक्षा, पर्यावरण शिक्षा, कार्यानुभव, कला शिक्षा विश्वशांति तथा विश्व बंधुत्व की भावना को पाठ्यक्रम में समाविष्ट किया गया है। भाषाई खेलों के माध्यम से भाषा की शिक्षा को तनाव रहित एवं रोचक बनाया गया है। प्रस्तुत पाठ्यक्रम में इस बात पर भी विचार किया गया है कि शिक्षा से विद्यार्थियों में सर्जनशीलता निर्मित हो, वे उपक्रमशील बनें तथा उनमें शोधदृष्टि का निर्माण हो। हिंदी को व्यवसायोन्मुख बनाया गया है। इसी तरह राज्य एवं राष्ट्र की समस्याओं को भी ध्यान में रखा गया है। भाषा शिक्षा के सर्वसामान्य उद्देश्य एवं द्वितीय भाषा के रूप में पाँचवीं से आठवीं तक हिंदी के विशिष्ट उद्देश्य स्पष्ट रूप से दर्ज किए गए हैं। प्रस्तुत पाठ्यक्रम में अध्ययन–अध्यापन विषयक नई सोच, नई पद्धति, जीवन कौशल, आधुनिक तकनीक एवं तत्त्व, व्यावहारिक परिवर्तन, निरंतर सर्वांगीण क्रमिक मूल्यांकन के प्रयोगशील, प्रभावी और समयोचित स्वरूप को भी स्वीकार किया गया है।

वर्तमान के साथ भविष्य की माँगों तथा चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए विद्यार्थियों को हिंदी भाषा पर अधिकार के संदर्भ में सभी अर्थों में सक्षम बनाना अपने–आपमें एक बड़ा उद्देश्य है। इसकी पूर्ति हेतु प्रस्तुत पाठ्यक्रम में कई बातों का समावेश करना पड़ा, जिनका उल्लेख ऊपर किया गया है। प्रश्न उपस्थित हुआ कि इन सबको समेटने के लिए /समाहित करने के लिए कौन–सा प्रारूप (Format) निश्चित किया जाए? पाठ्यक्रम पुनर्रचना समिति ने लंबी बहस के बाद भाषाई कौशलाधिष्ठित प्रारूप निश्चित किया। इसमें चार भाषाई कौशलों के साथ हिंदी की व्याकरणिक संरचना(क्रियात्मक व्याकरण) तथा व्यवहार एवं विविध व्यक्तियों में हिंदी प्रयोग के स्वरूप (व्यावहारिक सृजन) को सर्वोपरि स्थान देना कई कारणों से तर्कसंगत एवं उपयुक्त लगा। परिणामतः पुनर्रचित पाठ्यक्रम में भाषाई कौशलों/ क्षेत्रों को सबसे ऊपर रखते हुए हर कौशल/ क्षेत्र के घटकों/ उपघटकों को उसके अंतर्गत क्रमानुसार स्थान दिया गया है। इस पद्धति को अपनाने से भाषाई कौशलों/ क्षेत्रों के अधिकाधिक घटकों, उपघटकों को स्थान मिल पाया है।

राष्ट्रीय शैक्षणिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद द्वारा सूचित 'E R A C' अर्थात E- Experience, R- Reaction, A- Application, C- Consolidation के अनुरूप पाठ्यक्रम की रचना किए जाने पर समिति के सदस्यों में पर्याप्त चर्चा के बाद पाँचवीं से आठवीं कक्षा का पाठ्यक्रम विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास की दृष्टि से तैयार किया गया है।

सामान्य उद्देश्य

महाराष्ट्र के विद्यार्थी संचार माध्यमों द्वारा सामान्य हिंदी भाषा से परिचित हैं। हिंदी और मराठी दोनों भाषाएँ देवनागरी में लिपिबद्ध होने से पठन–पाठन के लिए सहज हैं। दोनों भाषाओं में शब्दावली के स्तर पर अधिक मात्रा में समानता है। प्रचार–प्रसार के विविध माध्यमों के कारण हिंदी भाषा शहरों के साथ–साथ ग्रामीण क्षेत्रों में भी प्रचलित है। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए प्राथमिक स्तर पर हिंदी शिक्षा के निम्नलिखित सामान्य उद्देश्य निश्चित किए गए हैं –

१. विविध माध्यमों का उपयोग कर श्रवण क्षमता का विकास करना।

२. हिंदी में धाराप्रवाह तथा प्रभावी संभाषण का विकास करना।

३. विद्यार्थियों में हिंदी साहित्य पठन के प्रति अभिरुचि जागृत करना।

४. हिंदी के माध्यम से साहित्यिक रसास्वादन एवं सौंदर्यबोध विकसित करने के साथ ही अपने विचारों और भावनाओं को अभिव्यक्त करने की क्षमता विकसित करना।

५. दैनिक जीवन तथा अन्य विषयक्षेत्र (साहित्य, विज्ञान, संचार माध्यम, विधि, स्वास्थ्य आदि) में हिंदी का प्रयोग एवं अन्य विषयों के साथ समन्वय स्थापित करते हुए हिंदी की जीवनाभिमुखी, व्यवसायोन्मुखी तथा जीवन कौशलपरक शिक्षा के प्रति उन्मुख करना।

६. उचित भाषाप्रयोग द्वारा, हिंदी के अनौपचारिक तथा औपचारिक भाषा रूपों में सामंजस्य स्थापित करना।

७. विविध उपक्रमों द्वारा संवैधानिक मूल्यों (स्वतंत्रता, समता, न्याय, बंधुत्व) तथा राष्ट्रीय एकात्मता, राष्ट्रप्रेम एवं धर्म निरपेक्षता के परिपोषण हेतु प्रवृत्त करना।

८. हिंदी द्वारा सामाजिक चेतना, सांस्कृतिक विरासत, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, श्रमनिष्ठा, परदुखकातरता, प्राणीमात्र के प्रति दया, खेल भावना, सत्यनिष्ठा, आचारनिष्ठा आदि मानवीय मूल्यों के प्रति सजगता पैदा कर इन गुणों को आत्मसात करने की ओर उन्मुख करना।

९. हिंदी द्वारा आपातकालीन प्रबंधन, मानवाधिकार एवं 'सर्व समावेशित शिक्षा' के प्रति जागृति पैदा करना।

१०. हिंदी के माध्यम से विद्यार्थियों में व्यक्तिगत चारित्रिक गुणों तथा जीवन कौशलों को विकसित करना।

विशिष्ट उद्देश्य

द्वितीय भाषा के रूप में हिंदी का अध्ययन–अध्यापन पाँचवीं कक्षा से आरंभ किया जा रहा है। इस निर्णय के अनुसार हिंदी भाषा के अध्यापन में अधिक सजगता आवश्यक हो गई है। संपर्क भाषा के रूप में हिंदी के प्रयोग हेतु विद्यार्थियों को प्रेरित करते समय हिंदी अध्ययन–अध्यापन के विशिष्ट उद्देश्यों को ध्यान में रखना अधिक आवश्यक है। विशिष्ट उद्देश्यों में मूलभूत कौशलों एवं क्षमताओं को समाविष्ट किया गया है। निरंतर सर्वांगीण क्रमिक मूल्यांकन के आधार पर विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास अपेक्षित है। तदनुसार पाँचवीं से आठवीं कक्षा तक द्वितीय भाषा के रूप में हिंदी के विशिष्ट उद्देश्य आगे दिए हैं –

१. आकाशवाणी, चलचित्र, दूरदर्शन, संगणक तथा अन्य दृक्– श्रव्य माध्यमों और शैक्षणिक संसाधनों के माध्यम से रोचक प्रेरक परिस्थितियों के निर्माण द्‌वारा विद्‌यार्थियों को स्वयंस्फूर्ति से श्रवण हेतु प्रवृत्त करना।

२. सरल–सुगम विषय पर हिंदी में बातचीत करने तथा अपने विचारों की अभिव्यक्ति हेतु प्रोत्साहित करना।

३. शैक्षणिक संदर्भ–सामग्री कोना एवं चलवाचनालय द्‌वारा वाचन के लिए प्रेरित करना। सौंदर्यबोध के प्रति उद्‌यत करना।

४. अपने अनुभव विश्व, कल्पना एवं समसामयिक विषयों पर लिखित रूप से अपने विचार प्रकट करने के लिए प्रवृत्त करना तथा कलात्मक अभिव्यक्ति की ओर उन्मुख करना।

५. शांतिपूर्ण, तनावमुक्त, बोझरहित, दंडमुक्त वातावरण में शिक्षा के लिए प्रेरित करना तथा हिंदी का भूगोल, गणित, सामान्य विज्ञान, इतिहास आदि अन्य विषयों के साथ सहसंबंध स्थापित करने की चेतना जगाना।

६. निरीक्षण एवं विविध कृतियुक्त उपक्रमों के माध्यम से विद्‌यार्थियों को भाषिक सर्जनशीलता के लिए प्रेरित करना।

७. बोली भाषा का आदर करते हुए मानक भाषा के व्यावहारिक प्रयोग हेतु उन्मुख करना। विद्‌यार्थियों को दैनिक सामान्य व्यवहार तथा विशिष्ट विषय क्षेत्रों (बैंक, पत्रकारिता, विधि, विज्ञान इत्यादि) में परंपरागत एवं आधुनिक तकनीक के माध्यम से भाषा के प्रयोग के लिए सक्षम बनाना। विविध सेवाओं, व्यावसायिक क्षेत्रों में प्रयुक्त होने वाली भाषा की जानकारी देकर उसके प्रयोग के लिए प्रवृत्त करना।

८. भाषाओं के समन्वय द्‌वारा भावात्मक एकता, देशप्रेम एवं विश्वबंधुत्व के परिपोषण हेतु उद्‌यत करना।

९. हिंदी द्‌वारा संवैधानिक मूल्यों, पर्यावरण संरक्षण–संवर्धन एवं स्त्री–पुरुष समानता के प्रति निष्ठा जागृत करना।

१०. ऐतिहासिक स्थलों, सांस्कृतिक परंपराओं का हिंदी भाषा के माध्यम से संरक्षण–संवर्धन करना।

विषय : हिंदी द्‌वितीय भाषा (संयुक्त)

भाषाई कौशल/क्षेत्र : श्रवण (पाठ्‌यक्रम) **कक्षा–पाँचवीं**

अ क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
	* भाषाई खेल : ध्वनि/बोली/ आवाज पहचानना– परिसर के पशु–पक्षियों/ प्राणियों की बोली सुनकर पहचानना	परिसर के पशु–पक्षी, प्राणियों के चित्र, प्राणियों की बोलियों के चार्ट	* विद्‌यार्थी परिसर के प्राणियों की बोली, आवाज सुनकर पहचानता है। उन ध्वनियों की नकल करता है। परिसर के प्राणियों के प्रति आत्मीयता एवं प्रेमभाव बढता है। * प्राणी संरक्षण की भावना विकसित होती है।	* मौखिक कार्य * कृति * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण
१.	पूर्व परिचित विषयों से संबंधित लयात्मक गीत, अभिनय गीत सुनना– सुनाना।	* लयात्मक गीत संग्रह, अभिनय गीत संग्रह, रोलअप बोर्ड, रेडियो, दूरदर्शन, सी. डी., डी.वी.डी., ध्वनिफीत	* लयात्मक गीत, अभिनय गीत समझते हुए सुनने में रुचि लेता है। * रेड्यिो, दूरदर्शन, सी.डी., डी.वी.डी. पर आने वाले लयात्मक, अभिनय गीत ध्यान से सुनता है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * कृति
२.	बोधकथा, चुटकुले सुनना–सुनाना। (सत्य, बंधुता, प्रेम, न्याय, शांति संबंधी)	* बोधकथा संग्रह, सी. डी., डी.वी.डी, ध्वनिफीत, दूरदर्शन, रेडियो	* बोधकथा, चुटकुले रुचिपूर्वक सुनता है। सुनी हुई बोधकथा, चुटकुलों को दोहराने में रुचि लेता है। * समझते हुए सुनने में रुचि लेता है। * एक शब्द में उत्तर देता है। * बोधकथाओं के माध्यम से सम अनुभूति एवं सहसंबंध स्थापित करता है। मूल्यों को अपनाता है। * ध्यान से सुनने की आदत बनती है।	* निरीक्षण * सामान्य प्रात्यक्षिक * कृति
३.	मात्रा रहित शब्द सुनना–सुनाना।	* मात्रा सहित शब्द कार्ड, चार्ट, ध्वनिफीत, सी.डी., डी.वी.डी., संगणक	* मात्रा रहित शब्दों को रुचिपूर्वक सुनता है। सुने हुए शब्दों को दोहराता है। * मात्रा रहित शब्दों का उपयोग करते हुए सरल वाक्य बनाता है। * मातृभाषा और हिंदी के शब्दों में समन्वय प्रस्थापित करता है।	* निरीक्षण * सामान्य प्रात्यक्षिक * कृति

अ क्र.	अध्ययन-अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
			* सुने हुए शब्दों का प्रयोग सुनाते समय करता है। सहसंबंध स्थापित करता है।	* निरीक्षण
४.	मात्रा सहित शब्द सुनना-सुनाना।	* मात्रा सहित शब्द चार्ट/ शब्द कार्ड, दूरदर्शन, सी. डी., डी.वी,डी.	* मात्रा सहित शब्दों को सुनने में रुचि लेता है। * मात्रा रहित एवं मात्रा सहित शब्दों की रचना सुनकर समझता है। * मात्रा रहित एवं मात्रा सहित शब्दों का प्रयोग करके छोटे-छोटे वाक्य बनाकर सुनाता है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * कृति
५.	स्वर, व्यंजन, विशेष वर्ण, अनुनासिक, अनुस्वार, विसर्ग, संयुक्ताक्षर, पंचमाक्षर का श्रवण के माध्यम से परिचय करना-कराना।	* चित्र कार्ड, वर्ण-चार्ट, शब्द कार्ड, ध्वनिफीत, सी.डी., डी.वी.डी.	* स्वर, व्यंजन, पंचमाक्षर, विशेष वर्ण, अनुनासिक, अनुस्वार, विसर्ग, संयुक्ताक्षर आदि का श्रवण के माध्यम से परिचय प्राप्त करता है। * स्वर-वर्णों की ध्वनियों को सुनकर उनके अंतर को समझता है। * स्वर और व्यंजन की ध्वनियों के अंतर को सुनकर पहचानता है। * अनुनासिक, अनुस्वार, विसर्ग, संयुक्ताक्षर को स्पष्ट रूप से सुनकर उनके उच्चारण की भिन्नता को समझने का प्रयास करता है। * मातृभाषा एवं हिंदी के वर्णों की ध्वनियों में सहसंबंध स्थापित करता है एवं उनके अंतर को श्रवण के माध्यम से समझता है। * घर, परिसर में सुनी हुई ध्वनियों का विद्यालय में सुनी हुई ध्वनियों से सहसंबंध स्थापित करता है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * कृति

अ क्र.	अध्ययन-अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
	* **भाषाई खेल – 'पहचानो मुझे'** उदाहरण – चित्र दिखाकर परिचित चीजों के बारे में बोलने के लिए कहना। जैसे-आम, गुलाब, कद्दू।	* चित्र * चित्रकार्ड * प्रक्षेपक (O.H.P.) * फोल्डर (चित्रों का)	* चित्र देखकर प्रत्येक विद्यार्थी शब्द बोलता है। * चित्र देखकर शब्दों का प्रयोग वाक्यों में करता है। * समूह चर्चा में बिना झिझक के सहभागी होता है। * मातृभाषा के शब्द तथा हिंदी के शब्दों में समन्वय का प्रयास करता है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * मौखिक कार्य * कृति * कक्षाकार्य
१.	अपना परिचय एवं परिवार के सदस्यों का परिचय देना।	* चित्र	* अपना, अपने परिवार के सदस्यों का परिचय देता है। * परिवार के बारे में जानकारी देने की क्षमता प्राप्त होती है। * अपने परिवार के प्रति आत्मीयता बढ़ती है। * पड़ोसी परिवारों के साथ सहसंबंध स्थापित करने की ओर उन्मुख होता है। * सम अनुभूति होती है। * 'स्व' की पहचान होती है ।	* निरीक्षण * कक्षाकार्य * मौखिक कार्य

अ क्र.	अध्ययन-अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
२.	दैनिक उपयोग की वस्तुओं का वर्णन करना।	* चार्ट चित्र	* चित्र देखकर वस्तुओं के उपयोग के बारे में बताता है। * सरल प्रश्नों के उत्तर देने में रुचि रखता है। * चर्चा में सहभागी होता है। * प्रश्न पूछकर जानकारी प्राप्त करता है। * बातचीत करते समय आत्मविश्वास बढ़ता है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * मौखिक कार्य
३.	कार्यक्रम में सम्मिलित होकर विद्यालय में चर्चा करना।	* त्योहार, जन्मदिन आदि से संबंधित चार्ट्स, सी.डी., डी.वी.डी, छायाचित्र आदि.	* कक्षा में उत्साह के साथ घरेलू कार्यक्रम की जानकारी देता है। * अपने मित्रों के घर में मनाए गए कार्यक्रम की जानकारी देने की क्षमता विकसित होती है। * मंच पर घरेलू कार्यक्रम की जानकारी बेझिझक देता है। * पड़ोसियों एवं मित्रों के परिवार के कार्यक्रमों से सहसंबंध स्थापित करने की क्षमता में वृद्धि होती है। शब्द संपत्ति का विकास होता है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * मौखिक कार्य
४.	पूर्व परिचित बालकथा, बालगीत हाव-भाव के साथ प्रस्तुत करना। (मित्रता, स्वच्छता संबंधी)	* सी.डी., डी.वी.डी., फोल्डर पचंतंत्र, इसप की कहानियाँ, गिनती चार्ट, चित्रकथा-पुस्तिका	* मातृभाषा एवं हिंदी की पूर्व परिचित कहानियाँ एवं बालगीत उत्साह, उचित हाव-भाव के साथ प्रस्तुत करता है। * घर-परिवेश में बातचीत करते समय उचित हाव-भाव का प्रयोग करता है। * जीवन मूल्यों एवं जीवन कौशलों की ओर उन्मुख होता है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक

अ क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
५.	स्वर–व्यंजन, अनुस्वार, अनुनासिक, विसर्ग तथा विशेष वर्णों, पंचमाक्षरों संयुक्ताक्षरों का स्पष्ट उच्चारण करना–कराना।	* वर्ण कार्ड, वर्ण चार्ट, चित्र कार्ड, शब्दकार्ड. सी.डी., डी.वी.डी., ध्वनिफीत	* चित्रों के माध्यम से उचित उच्चारण करता है। * मातृभाषा एवं हिंदी की ध्वनियों, वर्णों की समानता और भिन्नता पहचानने की ओर अग्रसर होता है। * संभाषण में वर्णों एवं शब्दों का सही उच्चारण करता है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * मौखिक कार्य * कृति

भाषाई कौशल/क्षेत्र : वाचन **कक्षा–पाँचवीं**

अ क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
	* **भाषाई खेल – 'मेल मिलाप'** अलग–अलग विद्यार्थियों के गले में चित्र कार्ड और संबंधित चित्र के वर्ण कार्ड लटकाकर चित्रों और वर्णों की संगत बिठाना। (मात्रा रहित शब्द)	* चित्र कार्ड शब्द कार्ड वर्ण कार्ड	* चित्र और वर्णों की संगत बिठाने में रुचि रखता है। * वर्णों को पहचानता है। * परिसर के साईनबोर्ड एवं फलक पर लिखे वर्णों को पहचानने का प्रयास करता है। * मातृभाषा एवं हिंदी के वर्णों की रचना में समन्वय स्थापित करता है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * मौखिककार्य * कृति
१.	अनुवाचन – लयात्मक गीत, बोधकथा, छोटे–छोटे वाक्य, लयात्मक शब्द एवं वर्णमाला का वाचन करना–कराना।	* वर्ण कार्ड, शब्द कार्ड, वाक्य पट्टियाँ रोलअप बोर्ड, प्रक्षेपक	* लयात्मक गीत, कथा आदि का रुचिपूर्वक अनुवाचन करता है। * वर्ण, शब्द को पहचानता है। * श्रवण एवं वाचन में रुचि उत्पन्न होती है। * शब्द संपत्ति का विकास होता है। * बोधकथा से प्राप्त जीवन मूल्यों एवं कौशलों को जीवन में उतारने के प्रति उन्मुख होता है।	* निरीक्षण * मौखिक कार्य * प्रात्यक्षिक * कृति
२.	मात्रा रहित वर्णों का वाचन करना–कराना। (स्वर, व्यंजन, संयुक्ताक्षर, पंचमाक्षर)	* मात्रा रहित शब्द कार्ड, वर्ण कार्ड, शब्द पट्टी	* मात्रा रहित वर्ण, शब्दों का वाचन करता है। वर्णों के अवयवों को पहचानता है। * वर्णों की संगति बिठाकर सार्थक शब्द बनाता है। * वर्णों से नए–नए शब्द बनाकर वाचन करता है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * मौखिककार्य * कक्षाकार्य * सहपुस्तक मूल्यांकन * कृति

अ क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
३.	मात्रा सहित वर्णों का वाचन (स्वर, व्यंजन, संयुक्ताक्षर, पंचमाक्षर) करना–कराना।	* शब्द कार्ड (मात्रा सहित) शब्द कार्ड, चित्रकार्ड, शब्द पट्टियाँ वाक्य पट्टियाँ, सुविचार, घोषवाक्य तालिका	* मात्रा सहित शब्दों का वाचन करता है। * मात्रा सहित शब्दों से वाक्य बनाकर वाचन करता है। * विद्यालय परिवेश में लगाए गए फलकों का वाचन करता है। * वाचन के प्रति रुचि जागृत होती है।	* निरीक्षण * कक्षाकार्य
४.	मुखर एवं मौन वाचन–वर्णमाला, लयात्मक शब्द, लयात्मक गीत, बोधकथा का वाचन करना–कराना। (समय पालन, अनुशासन)	* लयात्मक शब्द चार्ट * संदर्भ साहित्य * तालिकाएँ वर्णमाला चार्ट * लयात्मक गीत संग्रह * बालकथा संग्रह * रोलअप बोर्ड	* मुखर एवं मौन वाचन में रुचि लेता है। * लयात्मक गीत, बोधकथा से वाचन में प्रवाह लाने का प्रयास करता है। * विद्यार्थी आदर्श वाचन प्रतियोगिता में हिस्सा लेता है। * समय पालन–अनुशासन का महत्त्व पहचानता है।	* निरीक्षण * कक्षाकार्य * स्वाध्याय
५.	दिनदर्शिका, समाचारपत्र, फलक वाचन करना–कराना।	* कैलेंडर, तालिकाएँ, समाचारपत्र, पत्रिकाएँ,	* वाचन में रुचि लेता है। * समाचारपत्र के खेल मनोरंजन आदि भागों का वाचन करने में रुचि लेता है। * समाचारपत्र का प्रतिदिन वाचन करने की रुचि जागृत होती है।	* निरीक्षण * कक्षाकार्य * कृति * अनुवाचन

भाषाई कौशल/क्षेत्र : लेखन

अ क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
	* **भाषाई खेल –** **'आकृति की पहचान'** एक दूसरे की पीठ पर उँगली से कोई भी गणितीय आकृति बनाना एवं पहचानना। उदा. गोल, चौकोर त्रिभुज आदि।		* रुचि लेते हुए विद्यार्थी एक दूसरे की पीठ पर बनाई गणितीय आकृतियाँ पहचानता है। * तनाव का समायोजन करता है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक
१.	अनुरेखन – मात्रा रहित, मात्रा सहित वर्णों का अनुरेखन करना। (वर्ण एवं शब्द) जैसे – क = क, र = र शब्द – नल = नल माता = माता	* संदर्भ साहित्य	* मात्रा रहित, मात्रा सहित वर्ण, शब्द आदि का अनुरेखन करता है। * वर्णों के संकेत समझते हुए अनुरेखन करता है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक
२.	* अनुलेखन–सुलेखन (शब्द एवं वाक्य) अंकों का अक्षरों में लेखन (१ से २० तक) करना–कराना।	* शब्द चार्ट * अंक चार्ट * वाक्य पट्टी * घर की वस्तुएँ	* शब्द एवं वाक्यों का अनुलेखन एवं सुलेखन करने में रुचि लेता है। * एक से बीस तक के अंकों से परिचित होता है। * घर की वस्तुओं के हिंदी नामों से परिचित होता है। * सुलेखन स्पर्धाओं में सहभागी होता है।	* प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * स्वाध्याय * सहपुस्तक कसौटी

अ क्र.	अध्ययन-अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
३.	श्रुत लेखन-शुद्ध लेखन (वर्ण, संयुक्त वर्णवाले शब्द एवं वाक्य) करना-कराना।	* चित्र कार्ड * शब्द कार्ड * सुवचन पट्टी	* आकलन करते हुए श्रुत लेखन में रुचि लेता है। * शब्द, वाक्य आदि का शुद्ध लेखन करने हेतु अग्रसर होता है। * लेखन में शुद्धता लाने का प्रयास करता है।	* प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य
४.	प्रश्नों को समझते हुए उत्तर लेखन (एक शब्द एवं एक वाक्य में) करना-कराना।	* प्रसंग-चित्र चार्ट * फलक पर लिखी हुई सामग्री * प्रश्न संच	* प्रश्नों के उत्तर लिखने में रुचि लेता है। * चित्रों को देखकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखने का प्रयत्न करता है। * आकलन क्षमता का विकास होता है। * क्या, कहाँ, क्यों आदि से बने प्रश्नों को समझते हुए उत्तर लिखता है।	* निरीक्षण * कसौटी * स्वाध्याय
५.	चित्र के आधार पर लेखन करना-कराना।	* चित्रकार्ड * फोल्डर * चित्रकथा	* चित्रों को देखते हुए स्वयं स्फूर्ति से चित्र का वर्णन लिखता है। * चित्रों के आधार पर कहानी लेखन करता है। * शब्द संपदा में वृद्धि होती है। * सर्जनशीलता, कल्पनाशक्ति का विकास होता है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * कक्षाकार्य * स्वाध्याय

भाषाई कौशल/क्षेत्र : क्रियात्मक व्याकरण

कक्षा–पाँचवीं

अ क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
	* **भाषाई खेल – शब्दपूर्ति** १) क – म २) म – ली ३) मीठा – ।	* चित्र कार्ड * शब्द कार्ड * वर्ण कार्ड	* चित्र देखकर रिक्त वर्ण की पूर्ति करते हुए शब्द बनाता है। * शब्द संपत्ति में वृद्धि होती है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक
१.	**वर्ण परिचय** (स्वर, व्यंजन, विशेष वर्ण, संयुक्ताक्षर, अनुस्वार, अनुनासिक, पंचमाक्षर, विसर्ग, हल चिह्न')	* वर्ण कार्ड वर्ण सारिणी शब्द सारिणी	* रुचि के साथ स्वर, व्यंजन विशेष वर्ण, संयुक्ताक्षर, अनुस्वार, अनुनासिक, पंचमाक्षर, विसर्ग, हल चिह्न आदि से परिचित होता है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * कक्षाकार्य * स्वाध्याय
२.	**शब्द परिचय** १) समान वर्णवाले शब्द ठनठन, छमछम. २) समानार्थी, विरुद्धार्थी, शब्द–समूह के लिए एक शब्द ३) हिंदी–मराठी में समान अर्थ में आने वाले शब्द – सूर्य–सूर्य, घर–घर ४) समोच्चारित किंतु भिन्न अर्थवाले शब्द – जैसे –तमाशा – हिंदी में खेल तमाशा – मराठी में लोकनाट्य चेष्टा – हिंदी में प्रयत्न चेष्टा– मराठी में मजाक	* चार्ट * चित्र * शब्दकार्ड * शब्द समूह कार्ड्स * शब्द कार्ड * फोल्डर्स	* लेखन, वाचन, भाषण–संभाषण में समानार्थी, विरुद्धार्थी, समान वर्णवाले शब्द आदि का उचित प्रयोग करता है। * वर्गीकरण, आकलन क्षमता के विकास की ओर अग्रसर होता है। * निर्णय क्षमता में वृद्धि होती है। * प्रभावी भाषण–संभाषण एवं लेखन की ओर उन्मुख होता है। * मराठी/हिंदी में पाए जाने वाले शब्दों के अर्थ और उच्चारण की दृष्टि से भिन्नता और समानता से अवगत होता है।	* प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * मौखिक कार्य * स्वाध्याय * कक्षाकार्य * कसौटी

अ क्र.	अध्ययन-अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
३.	**लिंग-वचन** शब्दों को पहचानना एवं प्रयोग करना। (स्त्रीलिंग, पुल्लिंग शब्द, एक वचन, बहुवचनवाले शब्दों का प्रयोग)	* चित्र एवं शब्द कार्ड * शब्द चार्ट * फोल्डर	* स्त्रीलिंग, पुल्लिंग, एकवचन, बहुवचन शब्दों को पहचानता है। * लिंग, वचन का ध्यान रखते हुए उचित शब्दों का प्रयोग करता है। * भाषा प्रयोग में शुद्धता एवं सरलता की ओर अग्रसर होता है। * वर्गीकरण एवं निर्णय क्षमता का विकास होता है। * शब्दों के लिंग एवं वचन में परिवर्तन करते समय शब्दों में उचित परिवर्तन की ओर ध्यान देता है।	* प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * स्वाध्याय
४.	**विरामचिह्न :** (अल्पविराम, अर्धविराम, पूर्णविराम, प्रश्नवाचक चिह्न)	* चिह्नों के चार्ट * विरामचिह्नयुक्त छोटे-छोटे वाक्य * चार्ट फलक लेखन	* अल्पविराम, अर्धविराम, पूर्णविराम, प्रश्नवाचक चिह्नों को पहचानता है। * मातृभाषा एवं हिंदी के विरामचिह्नों की समानता एवं भिन्नता से अवगत होता है। * वाक्य लेखन में विरामचिह्नों का प्रयोग करता है। * भाषण-संभाषण एवं वाचन करते समय विराम चिह्नों के अनुसार उचित लय-ताल, हावभाव आरोह-अवरोह का ध्यान रखते हुए प्रस्तुति करता है। * व्यवहार में अनुशासित जीवन जीने की ओर उन्मुख होता है।	* प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कसौटी * स्वाध्याय * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन

अ क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
५.	**वर्तनी का प्रयोग –** वर्ण, संयुक्ताक्षर, विशेष वर्ण, पंचमाक्षर, अनुनासिक (चंद्रबिंदु) अनुस्वार, विसर्ग, हल चिह्न आदि का मानक वर्तनी के नियमों के अनुसार सरल शब्दों तथा वाक्यों का लेखन। * क्रिया के काल का सामान्य परिचय	* वर्णों एवं शब्दों के मानक रूप का चार्ट * संदर्भ साहित्य * वाक्यपट्टियाँ (काल सूचित करनेवाली)	* वर्तनी के मानक रूप से अवगत होता है। * संभाषण, वाचन–लेखन में वर्णों एवं शब्दों के मानक रूप का प्रयोग करता है। * वर्गीकरण, निर्णयक्षमता का विकास होता है। * संयुक्ताक्षरों और पंचमाक्षरों का मानक लेखन एवं उच्चारण करता है। * क्रिया के कालों का समान्य परिचय प्राप्त करता है।	* प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * स्वाध्याय * सहपाठी मूल्यांकन

भाषाई कौशल/क्षेत्र : व्यावहारिक सृजन **कक्षा–पाँचवीं**

अ क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
१.	* **भाषाई खेल** – मातृभाषा के शब्दों एवं वाक्यों का हिंदी में मौखिक अनुवाद करना। **अनुवाद लेखन** – मातृभाषा के शब्दों एवं वाक्यों का हिंदी में अनुवाद करना– **उदा.** – पाणी – पानी वडक्कम – नमस्कार शब्दों एवं इनसे युक्त वाक्यों का हिंदी में अनुवाद करना। **उदा.** – मला पाणी दे. (मराठी में) मुझे पानी दो। (हिंदी में)	* शब्द कार्ड * वाक्य पट्टी * फोल्डर * शब्द कार्ड * वाक्य पट्टी * फोल्डर	* रुचि लेते हुए मातृभाषा के शब्दों का हिंदी में मौखिक अनुवाद करता है। * हिंदी के शब्दों का मातृभाषा में मौखिक अनुवाद करता है। * मातृभाषा के शब्दों एवं वाक्यों का हिंदी में अनुवाद करते हुए लेखन करता है। * मातृभाषा एवं हिंदी की ध्वनियों, वर्णो एवं शब्दों की अर्थ भिन्नता एवं समानता से अवगत होता है। * मातृभाषा एवं हिंदी में सहसंबंध स्थापित करता है।	* प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * स्वाध्याय
२.	**व्यावसायिक लेखन** – भेंट कार्ड तैयार करके उचित शब्दों का लेखन करना। उदा. जन्मदिन, नववर्ष, त्योहार, सफलता आदि के बधाई/अभिनंदन कार्ड बनाकर उसपर संदर्भानुसार लेखन करना।	* कार्ड पेपर * कैची, पेंसिल * गम/पेस्ट आदि * व्यावसायिक शब्द कार्ड	* भेंट कार्ड बनाते समय रचनात्मक विचार करता है। * उचित शब्दों का उचित स्थान पर प्रयोग करता है। कलात्मक तथा आकर्षक लेखन की प्रवृत्ति विकसित होती है। * जीवन में सुचारुपन एवं अनुशासन आदि प्रवृत्तियों की ओर उन्मुख होता है। * सम अनुभूति विकसित होती है।	* प्रात्यक्षिक * कृति * निरीक्षण * कक्षाकार्य * स्वाध्याय * सहपाठी मूल्यांकन

अ क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
३.	**नाट्यीकरण –** कृषक एवं परिसर के सभी व्यवसायियों का हाव–भाव सहित सामूहिक अभिनय करना (किसान, डाकिया सैनिक, नर्स, शिक्षक, वकील आदि)	✻ व्यावसायिकों के चित्र कार्ड ✻ व्यवसाय से संबंधित शब्द कार्ड	✻ कृषक एवं परिसर के व्यावसायिकों का हावभाव सहित सामूहिक अभिनय करता है। ✻ कृषक एवं परिसर के व्यावसायियों के प्रति आदरभाव विकसित होता है। ✻ समानता एवं श्रम प्रतिष्ठा का भाव जागृत होता है।	✻ प्रात्यक्षिक ✻ निरीक्षण ✻ कक्षाकार्य ✻ सहपाठी मूल्यांकन
४.	**लिप्यंतरण –** हिंदी के शब्दों का रोमन (अंग्रेजी) लिपि में लेखन करना उदा. पानी – PANI जयराम – JAYRAM	✻ हिंदी के शब्द कार्ड ✻ रोमन लिपि के कुछ शब्द कार्ड	✻ हिंदी शब्दों का रोमन लिपि में लिप्यंतरण करने का प्रयास करता है। ✻ देवनागरी के शब्दों का रोमन लिपि में लिप्यंतरण करने की रुचि उत्पन्न होती है। ✻ दोनों लिपियों के लेखन एवं उनके उच्चारण की समानता एवं भिन्नता को समझने का प्रयास करता है।	✻ प्रात्यक्षिक ✻ कृति ✻ निरीक्षण ✻ उपक्रम
५.	**सांकेतिक चिह्नों का रेखन अक्षरों में लेखन करना।** गणितीय चिह्न : +,–,×,÷,= मानचित्र : आदि अस्पताल यातायात जेब्रा क्रॉसिंग ≡ शांति–क्षेत्र, शाला–विद्यार्थी क्षेत्र, सिग्नल आदि	✻ गणितीय, मानचित्र, अस्पताल, यातायात आदि के सांकेतिक चिह्न एवं नाम कार्ड तालिका चार्ट	✻ चिह्नों की सांकेतिक सूचनाओं का पालन करता है। ✻ गणितीय, मानचित्र, अस्पताल, यातायात के सांकेतिक चिह्नों का रेखन, अक्षरों में लेखन करता है। ✻ व्यक्तिगत, सामाजिक एवं राष्ट्रीय हित की सूचनाओं के पालन की प्रवृत्ति विकसित होती है। ✻ राष्ट्रीयता का विकास होता है ।	✻ प्रात्यक्षिक कृति ✻ निरीक्षण ✻ कक्षाकार्य ✻ स्वाध्याय ✻ उपक्रम

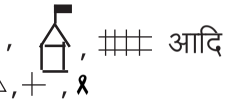

विषय : हिंदी द्‌वितीय भाषा (संयुक्त)

(पाठ्‌यक्रम)

भाषाई कौशल/क्षेत्र : श्रवण | **कक्षा–छठी**

अ क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
	भाषाई खेल : **आओ खेलें अक्षरों की गलियों में** * उदा. कमल– क – कल, कम, कटाई म – मन, मकई, मगर ल – लहर, लड़की, लरकोरी	* चित्र कार्ड, वर्ण कार्ड (मात्रा रहित, मात्रा सहित)	* प्रत्येक विद्‌यार्थी रुचिपूर्वक विभिन्न अक्षरों से नए–नए शब्द बनाता है। * सुने गए वर्ण एवं शब्दों को दोहराता है। * शब्द संपत्ति का विकास होता है। * रचनात्मकता का विकास होता है ।	* कृति * प्रात्यक्षिक * मौखिककार्य * निरीक्षण
१.	बालगीत, अभिनय गीत सुनना/सुनाना। (पर्यावरण संरक्षण एवं परिसर के संदर्भ में)	* ध्वनिफीत, सी.डी., डी.वी.डी., संगणक, दूरदर्शन, रेडियो	* बालगीत एवं अभिनय गीत ध्यानपूर्वक सुनने में आनंद लेता है। * कक्षा के अन्य विद्‌यार्थियों को सुने हुए बालगीत एवं अभिनय गीत सुनाता है। * तनाव एवं भावनाओं का समायोजन करता है। * पर्यावरण संरक्षण के प्रति सचेत होता है। * वृक्ष–संवर्धन में रुचि लेता है।	* कृति * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * उपक्रम
२.	साहस कथा (परिसर के संदर्भ में), संवाद सुनना/सुनाना।	* संदर्भ साहित्य ध्वनिफीत सी.डी., डी. वी. डी., दूरदर्शन, संगणक, रेडियो	* साहस कथा (परिसर के संदर्भ में), संवाद ध्यानपूर्वक सुनने/सुनाने में रुचि लेता है। * निडरता, निर्णयक्षमता आदि गुणों का विकास होता है। * परिसर की घटनाओं का वर्णन सुनता/सुनाता है।	* कृति * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * उपक्रम

अ क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
३.	वाक्य एवं परिच्छेद में आए विशेष वर्णों का परिचय * कुछ हिंदी वर्णों के दो–दो उच्चारण– उदा. ज–ज, झ–झ, च–च * हिंदी और मराठी की उच्चारण भिन्नता। उदा. च, ज, झ, ज्ञ, ऋ	* वाक्य पट्टी, परिच्छेद चार्ट, सी. डी. संगणक, रेडियो आदि	* हिंदी के विशेष वर्णों की उच्चारण–भिन्नता को समझते हुए सुनता है। * हिंदी और मराठी के विशेष वर्णों की उच्चारण भिन्नता को समझते हुए सुनता है। * वर्गीकरण क्षमता का विकास होता है।	* कृति * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * उपक्रम
४.	आकाशवाणी, दूरदर्शन, शालेय कार्यक्रम, विज्ञापन सुनना/सुनाना।	* विज्ञापन पट्टी, रेडियो, दूरदर्शन, कार्यक्रम की सी. डी., डी. वी. डी.	* आकाशवाणी, दूरदर्शन आदि के कार्यक्रम एवं विज्ञापन ध्यानपूर्वक सुनता–सुनाता है। * सुनी हुई सामग्री कार्यक्रम, विज्ञापन अन्य विद्‍यार्थियों को सुनाता है। * सुने हुए कार्यक्रमों के माध्यम से नैतिक मूल्यों को अपनाने का प्रयास करता है।	* कृति * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण
५.	स्वर, व्यंजन, विशेष वर्ण, अनुनासिक, अनुस्वार विसर्ग, संयुक्ताक्षर, हल चिह्न का पुनरावर्तन १ से ५० तक के अंकों को सुनना–सुनाना।	* स्वर, व्यंजन, विशेष वर्ण, अनुस्वार, विसर्ग, संयुक्ताक्षर, हल चिह्न का कार्ड, सी.डी., डी. वी.डी., अंक एवं अक्षरों में १ से ५० तक की अंक तालिका।	* स्वर, व्यंजन, विशेष वर्ण, अनुनासिक, अनुस्वार, विसर्ग, संयुक्ताक्षरों को ध्यानपूर्वक सुनता–सुनाता है। * १ से ५० तक की संख्याओं को सुनता–सुनाता है। * मातृभाषा एवं हिंदी की ध्वनियों की समानता–भिन्नता से अवगत होता है। * बोलचाल में अंकों का सही प्रयोग करता है।	* कृति * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण

भाषाई कौशल/क्षेत्र : भाषण-संभाषण **कक्षा-छठी**

अ क्र.	अध्ययन-अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
	भाषाई खेल : आज मैंने किया....(कृति-सभी विद्यार्थी/ सामूहिक रूप से वर्णमाला कहते हैं शिक्षक बीच में 'रुको' का आदेश देते है। जिस वर्ण पर विद्यार्थी रुकेंगें उस वर्ण से शुरू होनेवाले नाम के जितने विद्यार्थी होंगे वे गुट से बाहर आकर क्रमश: सुबह से लेकर अब तक क्या किया के बारे में पाँच-छह वाक्यों में बताएँगे।	* वर्णमाला का चार्ट	* रुचिपूर्वक आनंद लेते हुए खेल में सहभागी होता है। * खेल के द्वारा तनाव का समायोजन होता है। * स्व-परिचय द्वारा बिना रुके निडर होकर आत्मविश्वास के साथ बोलने की ओर उन्मुख होता है। * परस्पर सहसंबंध स्थापित करता है।	* कृति * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण
१.	घर, विद्यालय, त्यौहार आदि के बारे में बताना- उदा. **घर :** जन्मदिन, नामकरण, विवाह विद्यालय, बाल दिवस, स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस, विज्ञान दिवस आदि । **त्योहार :** दीपावली, ईद, क्रिसमस आदि।	* चित्र * चार्ट * संदर्भ साहित्य	* घर, विद्यालय में होनेवाली घटनाएँ त्योहार आदि के बारे में चर्चा करता है। * आँखों देखी घटनाओं का यथावत वर्णन करने की क्षमता क्रमश: विकसित होती है। * सर्व धर्म समभाव जागृत होता है। * राष्ट्रीय एकात्मता की भावना विकसित होती है।	* कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन

अ क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
२.	विद्यालय से संबंधित वस्तुओं के बारे में बताना। चर्चा करना–कराना। (प्रयोगशाला, ग्रंथालय, खेल साहित्य, शिक्षक कोना, विद्यार्थी कोना, संगणक कक्ष, शैक्षिक सामग्री।)	* आदर्श विद्यालय के चित्र।	* चर्चा में सहभागी होता है। * पाठशाला की वस्तुओं का वर्णन करता है। * पाठशाला की चीजों के संरक्षण की भावना जागृत होती है। * संभाषण की ओर उन्मुख होता है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * कक्षाकार्य * उपक्रम
३.	राष्ट्रीय त्योहार एवं विद्यालयीन कार्यक्रमों में सहभागी होकर चर्चा करना–कराना। **राष्ट्रीय त्योहार :** स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस, शहीद दिवस, गांधी जयंती आदि। **विद्यालयीन कार्यक्रम :** हिंदी दिवस, सांस्कृतिक कार्यक्रम, विज्ञान प्रदर्शनी आदि।)	* प्रासंगिक चित्र * घोष वाक्य पट्टियाँ * सूचना पट्टी	* राष्ट्रीय त्योहारों के कार्यक्रम में उत्साहपूर्वक सहभागी होता है। * भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास को समझते हुए समाज सुधारक क्रांतिकारियों के प्रति आदरभाव जागृत होता है। * देशप्रेम एवं देशभक्ति का भाव विकसित होता है। * भारत की सांस्कृतिक विरासत से अवगत होता है।	* प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * मौखिक कार्य * कृति
४.	लघुकथा एवं घटनाओं का वर्णन करना। * अंकों का सही उच्चारण करना (१ से ५० अंक)	* चित्र * फोल्डर * चित्रकथा * अंक तालिका (अंकों एवं अक्षरों में)	* छोटी–छोटी कथाएँ कक्षा में प्रस्तुत करता है। * हाव–भाव एवं आरोह–अवरोह के साथ प्रस्तुति में रुचि लेता है। * लघुकथा एवं घटनाओं के वर्णन से भावनाओं का समायोजन होता है। * लघुकथा के पात्रों के साथ सहसंबंध प्रस्थापित करने का प्रयास करता है। * व्यवहार में अंकों की, अक्षरों में उचित अभिव्यक्ति करता है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * कक्षाकार्य * उपक्रम

अ क्र.	अध्ययन-अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
५.	बातचीत, संभाषण में मानक एवं स्पष्ट उच्चारण करना-(शब्द और वाक्य में आए हुए स्वर, व्यंजन, संयुक्ताक्षर, पंचमाक्षर का स्पष्ट एवं मानक उच्चारण करना।)	* चार्ट (स्वर, व्यंजन, संयुक्ता-क्षर, पंचमाक्षर, शब्दों का चार्ट)	* बातचीत में शब्द एवं वाक्य में आनेवाले स्वर, व्यंजन, संयुक्ताक्षरों पंचमाक्षरों का स्पष्ट एवं मानक उच्चारण करने की ओर प्रवृत्त होता है।	* प्रात्यक्षिक * निरीक्षण
	माध्यम भाषा एवं हिंदी की विशेष ध्वनियों को समझकर उचित उच्चारण करना-कराना।	* माध्यम भाषा एवं हिंदी की विशेष ध्वनियों का तुलनात्मक चार्ट।	* माध्यम भाषा एवं हिंदी की विशेष ध्वनियों का हिंदी के अनुसार उचित व स्पष्ट उच्चारण करता है। * माध्यम भाषा एवं हिंदी की विशिष्ट ध्वनियों में उच्चारणगत समानता एवं भिन्नता को समझता है। * घटना तथा प्रसंग वर्णन के माध्यम से अभिव्यक्ति क्षमता का विकास होता है।	* कक्षाकार्य

भाषाई कौशल/ क्षेत्र : वाचन

कक्षा–छठी

अ क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वकष मूल्यमापन
	भाषाई खेल : 'साथी हाथ बढ़ाना'– अलग बच्चों के गले में चित्र कार्ड और शब्द कार्ड लटकाकर चित्रों और शब्दों की संगति बिठाते हुए शब्दों की पहचानकर वाचन करना/कराना।	* वर्ण कार्ड * शब्द कार्ड * चित्र कार्ड	* चित्र और शब्दों की संगति बिठाकर उनका रुचिपूर्वक वाचन करता है। * परिसर में लगे पोस्टर्स, विज्ञापनों के चित्रों एवं शब्दों में संगति बिठाते हुए वाचन करता है।	* मौखिक कार्य * कृति * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन
१.	अनुवाचन : बालगीत, कविता, साहस कथा आदि का वाचन करना–कराना।	* संदर्भ साहित्य * कथा फोल्डर्स * बालगीत, कविता चार्ट।	* बालगीत, कविता, साहस कथा आदि का रुचिपूर्वक अनुवाचन करता है। * शिक्षक द्वारा पढ़ी गई सामग्री को दोहराता है। * बालगीत कविता के माध्यम से तनाव एवं भावनाओं का समायोजन होता है। * साहस भाव का संचार होता है। * संपूरक वाचन की रुचि बढ़ती है। * आकलन क्षमता का विकास होता है।	* कृति * मौखिक कार्य * निरीक्षण * कक्षाकार्य
२.	भित्ति चित्र, विज्ञापन, विद्यालयीन सूचना फलक एवं समाचारपत्र का वाचन करना–कराना।	* विज्ञापन पट्टी * वाक्य पट्टी * विज्ञापन, सूचना–फलक चार्ट * समाचारपत्र	* भित्तिचित्र, विज्ञापन, समाचारपत्र विविध फलक पढ़ने में रुचि लेता है। * शुद्ध एवं मानक उच्चारण की ओर प्रवृत्त होता है। * विद्यालयीन सूचना फलकों के संरक्षण की प्रवृत्ति जागृत होती है।	* मौखिक कार्य * कृति * निरीक्षण * कक्षाकार्य * स्वाध्याय

अ क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
३.	परिवेशगत सार्वजनिक स्थलों के सूचना फलक का वाचन करना।	❋ सूचना फलकों के प्रतिकृति चार्ट। ❋ सूचना फलक। ❋ सूचना वाक्य पट्टी।	❋ परिसर के सार्वजनिक स्थलों की सूचनाओं का रुचिपूर्वक वाचन करता है। ❋ परिसर के डाकघर, बैंक, अस्पताल, रेल्वे, स्थानकों के प्रति अपनत्व की भावना जागृत होती है। ❋ सार्वजनिक स्थलों के संरक्षण के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित होता है। ❋ शुद्ध एवं मानक वाचन की ओर उन्मुख होता है।	❋ कृति ❋ प्रात्यक्षिक ❋ निरीक्षण ❋ सहपाठी मूल्यांकन ❋ स्वाध्याय
४.	**मुखर एवं मौन वाचन :** विराम चिह्नों सहित परिच्छेद का मुखर एवं मौन वाचन १ से ५० तक अक्षरों में लिखे अंकों का वाचन।	❋ परिच्छेद चार्ट (विराम चिह्नोंयुक्त) ❋ समाचारपत्र ❋ अक्षरों में लिखे अंकों के कार्ड व चार्ट।	❋ विरामचिह्नयुक्त परिच्छेद एवं अक्षरों में लिखे १ से ५० तक के अंकों का रुचिपूर्वक मुखर एवं मौन वाचन करता है। ❋ मौन वाचन के माध्यम से एकाग्रता विकसित होती है। ❋ आकलन क्षमता का विकास होता है। ❋ शुद्ध एवं मानक वाचन की ओर उन्मुख होता है।	❋ कृति ❋ प्रात्यक्षिक ❋ निरीक्षण ❋ कक्षाकार्य ❋ स्वाध्याय ❋ सहपाठी मूल्यांकन
५.	मुहावरे, शब्दयुग्मयुक्त परिच्छेद का वाचन करना।	❋ मुहावरों का चार्ट ❋ शब्दयुग्म का चार्ट ❋ छोटे–छोटे परिच्छेद के चार्ट।	❋ मुहावरे, शब्दयुग्मयुक्त परिच्छेद का वाचन करता है। ❋ उचित आरोह–अवरोह के साथ वाचन की ओर उन्मुख होता है। ❋ संभाषण में मुहावरों, शब्दयुग्मों के प्रयोग की ओर उन्मुख होता है। ❋ भाषाई सौंदर्य बोध की ओर अग्रसर होता है।	❋ कृति– ❋ निरीक्षण ❋ प्रात्यक्षिक

भाषाई कौशल/ क्षेत्र : लेखन **कक्षा–छठी**

अ क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
	भाषाई खेल : 'विरासत की पहचान' कृति : संतों, कवियों, लेखकों, महापुरुषों, ऐतिहासिक स्थलों, वैज्ञानिकों के चित्र की पर्ची एकत्रित रखना। प्रत्येक विद्‍यार्थी द्‍वारा एक–एक पर्ची उठाना एवं हाथ में आई पर्ची के चित्र का नाम बोर्ड पर लिखना।	संत, कवि, वैज्ञानिकों, ऐतिहासिक स्थलों आदि की पर्चियाँ।	* आनंद लेते हुए पर्ची उठाकर पर्ची के चित्र का नाम बोर्ड पर लिखता है। * महान विभूतियों के प्रति आदर भाव जागृत होता है। * सांस्कृतिक, साहित्यिक,ऐतिहासिक, वैज्ञानिक विरासत के प्रति आत्मीयता एवं संरक्षण भावना विकसित होती है।	* कृति * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण
१.	**अनुलेखन–सुलेखन करना–करना :** (वाक्य, परिच्छेद)	* वाक्य पट्‌टी * परिच्छेद चार्ट * घोष वाक्य * सुवचन पट्‌टी	* दिए हुए वाक्य, परिच्छेद का अनुलेखन–सुलेखन करता है। * लेखन में एकाग्रता की वृद्‍धि होती है।	* कृति (अनुलेखन–सुलेखन) * प्रात्यक्षिक * स्वाध्याय * कक्षाकार्य
२.	**श्रुतलेखन, शुद्‍धलेखन : (परिच्छेद का)** अंकों का अक्षरों में लेखन (१ से ५० तक)	* परिच्छेद चार्ट * १ से ५० तक के अंकों का अक्षरों में लिखा चार्ट। * अंकों के अक्षरों में लिखे अंक कार्ड	* दिए हुए परिच्छेद का आनंद लेते हुए श्रुतलेखन एवं शुद्‍धलेखन करता है। * १ से ५० तक के अंकों को अक्षरों में लिखता है। * निर्दोष एवं शुद्‍धलेखन की ओर प्रवृत्त होता है।	* लेखन कृति * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * स्वाध्याय * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन
३.	**हिंदी मानक वर्तनी के अनुसार लेखन :** (विराम चिह्नों सहित)	* विराम चिह्नों के संकेत चिह्न एवं उनके नामों का चार्ट * विराम चिह्नयुक्त परिच्छेद का चार्ट	* विराम चिह्नों का उपयोग करते हुए मानक वर्तनी के अनुसार लेखन और शुद्‍ध लेखन की ओर अग्रसर होता है। * स्व लेखन में उचित विरामचिह्नों का उचित जगह प्रयोग करता है।	* कृति * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * स्वाध्याय * कक्षाकार्य

अ क्र.	अध्ययन-अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
४.	**पठित गद्य, पद्य का आकलन-लेखन करना-कराना :** (सरल परिच्छेद पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखना।) (देशप्रेम, शांति, समानता पर आधारित)	* सरल परिच्छेद चार्ट। * प्रश्नसंच	* पठित गद्य का एकाग्रता के साथ आकलन करता है। * परिच्छेद के आधार पर छोटे-छोटे प्रश्नों के उत्तर मौखिक एवं लिखित रूप में देने की क्षमता विकसित होती है। * विद्यालय में शिक्षक द्वारा पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर लिखने की क्षमता विकसित होती है। * देशप्रेम, शांति, समानता का भाव जागृत होता है।	* कृति * प्रात्यक्षिक * स्वाध्याय * कक्षाकार्य
५.	**स्वयं स्फूर्त लेखन :** (रूपरेखा के आधार पर कहानी, घरेलू पत्र, निबंध लेखन)	* संदर्भ साहित्य * कहानी की रूपरेखा का चार्ट * पत्र लेखन हेतु रूपरेखा चार्ट * निबंध लेखन हेतु रूपरेखा चार्ट	* स्वयं स्फूर्त भाव से रूपरेखा के आधार पर कहानी, घरेलू पत्र, निबंध लेखन हेतु चर्चा करता है। * दी गई रूपरेखा के आधार पर कहानी, घरेलू पत्र, निबंध लेखन करता है। * सर्जनशीलता का विकास होता है।	* कृति * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * स्वाध्याय

अ क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
	भाषाई खेल : ''अपना साथी ढूँढ़ो'' कृति : कुछ शब्द और उनके समानार्थी शब्दों के कार्ड विद्यार्थियों में वितरित करना। विद्यार्थी का अपने–अपने शब्द कार्ड हाथ में दिखाते हुए पकड़ना–एक विद्यार्थी का आगे आकर अपने शब्द कार्ड पढ़ना और समानार्थी शब्द कार्ड वाले साथी को ढूँढ़कर जोड़ी बनाना।	* शब्दकार्ड (शब्द एवं उनके समानार्थी शब्दों के शब्द कार्ड)	* विद्यार्थी आनंदपूर्वक खेल में सहभागी होता है। * आकलन और निर्णयक्षमता में वृद्धि होती है। * शब्द संपदा में वृद्धि से भाषण एवं लेखन की सहजता में वृद्धि होती है।	* कृति * मौखिककार्य * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण
१.	**पुनरावृत्ति :** * वर्ण परिचय, शब्द परिचय, लिंग, वचन, प्रयोग. * शब्दयुग्म प्रयोग, मुहावरों का प्रयोग करना–कराना।	* वर्ण कार्ड * शब्द कार्ड * शब्दयुग्म कार्ड * मुहावरों की पट्टियाँ * एकवचन–बहुवचन दर्शाने वाले कार्ड	* कक्षा ५वीं में पढ़े हुए वर्ण, शब्द, लिंग, वचन का संभाषण में समझते हुए प्रयोग करता है। * अपने संभाषण एवं लेखन में शब्दयुग्मों और मुहावरों का प्रयोग करता है। * शुद्ध वाक्य रचना की ओर प्रेरित होता है।	* कृति * मौखिक कार्य * निरीक्षण * कक्षाकार्य * स्वाध्याय * उपक्रम
२.	**शब्द–भेद (स्थूल परिचय)** * विकारी, अविकारी शब्द भेदों का प्रयोग के माध्यम से परिचय करना। कराना। * उपसर्ग तथा प्रत्यय का प्रयोग के माध्यम से परिचय करना–कराना।	* विकारी, अविकारी शब्दों के चार्ट, फोल्डर्स * विकारी, अविकारी शब्दों के वाक्य प्रयोगवाली वाक्य पट्टी * उपसर्ग तथा प्रत्यय युक्त शब्दों के चार्ट	* विकारी, अविकारी शब्दों को पहचानता हैं और वाक्यों में प्रयोग करता है। * शब्दों में साथ उचित प्रत्यय एवं उपसर्ग का प्रयोग करता है। * शब्द संपदा में विकास होता है। * नए शब्दों की रचना करने की क्षमता में वृद्धि होती है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * कक्षाकार्य * स्वाध्याय

अ क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
३.	**कारकों तथा उनके चिह्नों की जानकारी प्राप्त करना–कराना।** (सामान्य परिचय)	✻ कारकों तथा उनके चिह्नों के अलग–अलग चार्ट	✻ विद्यार्थी कारकों के प्रयोग से परिचित होता है। ✻ कारकों के चिह्नों से अवगत होता है। ✻ संभाषण तथा लेखन में कारकों का उचित प्रयोग करता है। ✻ कारकों की जानकारी से विद्यार्थियों की वाक्यरचना में शुद्धता आती है।	✻ निरीक्षण ✻ प्रात्यक्षिक ✻ कक्षाकार्य ✻ स्वाध्याय ✻ उपक्रम
४.	**पुनरावृत्ति :** अल्पविराम (,), अर्धविराम (;), पूर्णविराम (।), प्रश्नचिह्न (?), विस्मयादि बोधक (!), अवतरण (‘ ’), (‘‘ ’’)	✻ विराम चिह्नों के संकेतों के नाम व उनके कार्ड ✻ परिच्छेद चार्ट (दिए गए विराम चिह्नों से युक्त परिच्छेद)	✻ वाक्य में प्रयोग द्वारा अल्पविराम अर्द्धविराम, पूर्णविराम, प्रश्नचिह्न से अवगत होता है। ✻ संभाषण एवं लेखन में इन चिह्नों का उचित प्रयोग करता है। ✻ उचित हाव–भाव, आरोह–अवरोह के साथ प्रभावी संभाषण एवं वाचन करता है।	✻ कृति ✻ मौखिककार्य ✻ प्रात्यक्षिक ✻ निरीक्षण ✻ कक्षाकार्य ✻ स्वाध्याय
५.	**वर्तनी का प्रयोग :** (वर्ण, संयुक्ताक्षर, विशेष वर्ण, पंचमाक्षर, अनुनासिक, अनुस्वार विसर्ग, हल चिह्न आदि के मानक रूपों का सरल शब्दों एवं वाक्यों में लेखन।)	✻ वर्ण कार्ड ✻ संयुक्ताक्षर युक्त कार्ड ✻ अनुनासिक, अनुस्वार, विसर्ग और हल चिह्न के संकेतों एवं नाम के कार्ड	✻ वर्ण, संयुक्ताक्षर, विशेष वर्ण, पंचमाक्षर, अनुनासिक, विसर्ग, हल चिह्न से अवगत होता है। ✻ संभाषण एवं लेखन में उचित विभक्तियों का उचित स्थान पर प्रयोग करता है। ✻ निर्णयक्षमता, सुव्यवस्थितता का विकास होता है। ✻ हिंदी भाषा के मानक प्रयोग से परिचित होता है।	✻ प्रात्यक्षिक ✻ कृति ✻ कक्षाकार्य ✻ स्वाध्याय

अ क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
	भाषाई खेल : '' मिले सुर मेरा तुम्हारा'' एक विद्यार्थी सामने आकर सुबह उठकर विद्यालय आने तक दिनचर्या की कृतियों को क्रमानुसार कहता है। उदाहरण : मैं सुबह उठकर मंजन/ब्रश करती हूँ। दूसरा विद्यार्थी उसका अभिनय करता है। अगला विद्यार्थी दिनचर्या का अगला क्रम कहता है – मैंने स्नान किया – अभिनय, अगला विद्यार्थी – मैंने चाय पी – अभिनय इसी तरह प्रत्येक विद्यार्थी को अवसर देना।		* विद्यार्थी आनंदपूर्वक खेल में सहभागी होता है। * अभिव्यक्ति कौशल विकसित होता है। * आत्मविश्वास में वृद्धि होती है। * सम अनुभूति विकसित होती है एवं भावनाओं का समायोजन होता है। * 'स्व की पहचान' होती है।	* मौखिककार्य * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कृति
१.	**अनुवाद :** मातृभाषा के वाक्यों का हिंदी में अनुवाद करना–कराना।	* वाक्य पट्टी * वाक्य चार्ट	* अपनी मातृभाषा के वाक्य का हिंदी में अनुवाद करता है। * मातृभाषा तथा हिंदी में सहसंबंध स्थापित करता है। * मातृभाषा के साथ–साथ हिंदी के प्रति आत्मीयता जागृत होती है। * व्यावहारिक जीवन में हिंदी के प्रयोग की ओर उन्मुख होता है।	* मौखिककार्य * कृति * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * स्वाध्याय

अ क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
२.	**व्यावसायिक लेखन :** * फेरीवालों द्वारा बोले जाने वाले शब्दों का लेखन * परिचित कार्यालयीन शब्द तथा वाक्य लेखन	* फेरीवालों के चित्र * फेरीवालों द्वारा बोले जानेवाले शब्दों का चार्ट * डाकघर बैंक, अस्पताल आदि में प्रयुक्त होने वाले शब्दों के चार्ट।	* विद्यार्थी फेरीवालों द्वारा बोले जानेवाले शब्दों एवं परिचित कार्यालयीन शब्दों का लेखन करता है। * कार्यालयीन शब्दों का अपने वाक्यों में प्रयोग करता है। * परिचित फेरीवालों एवं कार्यालयीन व्यक्तियों के प्रति आदरभाव और आत्मीयता विकसित होती है।	* कृति * प्रात्यक्षिक * कक्षाकार्य * स्वाध्याय
३.	**नाट्यकला :** परिसर के व्यवसायियों का एकपात्रीय अभिनय करना–कराना।	* परिसर के व्यवसायियों के चित्र, चार्ट * परिसर के व्यवसायियों–द्वारा उपयोग किए जानेवाले साधन/औजार के चार्ट	* परिसर के व्यवसायियों और उनके द्वारा किए जाने वाले कार्य एवं कार्य पद्धति का अभिनय कराता है। * अभिनय क्षमता का विकास एवं आत्मविश्वास में वृद्धि होती है। * भावी जीवन के व्यवसाय के चयन की ओर उन्मुख होता है। * अभिनय के माध्यम से भावनाओं का समायोजन होता है।	* कृति * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * स्वाध्याय
४.	**लिप्यंतरण :** हिंदी संदेशों का रोमन लिपि (अंग्रेजी) में लेखन करना–कराना। उदा. जन्मदिन की बधाई। (JANMADIN KI BADHAI)	* हिंदी में लिखे संदेशों का चार्ट * सुवचन चार्ट	* हिंदी में लिखे संदेशों को रोमन लिपि में लिखता है। * रोमन लिपि के संदेशों, सुवचनों को देवनागरी में लिखता है।	* कृति * निरीक्षण * कक्षाकार्य * स्वाध्याय

अ क्र.	अध्ययन-अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
	जयहिंद (JAI HIND) अंग्रेजी के संदेशों/शब्दों का देवनागरी (हिंदी) में लिप्यंतरण करना-करना। BANK – बैंक	* हिंदी में लिखे संदेशों का चार्ट * सुवचन चार्ट	* विद्यार्थी हिंदी में लिखे संदेशों को रोमन लिपि में लिखता है। * लिप्यंतरण में आनंद लेता है। * देवनागरी एवं रोमन लिपि तथा भाषा में समानता एवं भिन्नता से परिचित होता है।	* कृति * निरीक्षण * कक्षाकार्य * स्वाध्याय
५.	**सांकेतिक चिह्न :** * मुद्रित शोधन (प्राथमिक जानकारी) # अलग करना χ शब्द डालना ⌒ जोड़ना *d* निकालना	* सांकेतिक चिह्नों के नाम एवं चिह्न का चार्ट	* मुद्रित शोधन के सांकेतिक चिह्नों से अवगत होता है। * इन सांकेतिक चिह्नों के उपयोग को समझता है। * इन चिह्नों से सुपरिचित हो जाने पर शुद्ध और निर्दोष लेखन की ओर अग्रसर होता है।	* प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * स्वाध्याय

विषय : हिंदी द्‌वितीय भाषा (संयुक्त)

भाषाई कौशल/क्षेत्र : श्रवण — **(पाठ्यक्रम)** — **कक्षा-सातवीं**

अ क्र.	अध्ययन-अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
	* **भाषाई खेल :** 'बूझो तो जानें शब्द शृंखला बनाना उदा. पतंग = कागज, मांजा, धागा, आदि।		* विद्‌यार्थी किसी भी विषय से संबंधित सभी वस्तुओं के नामों की सूची तैयार करता है।	* निरीक्षण
१.	स्फूर्तिगीत, चुटकुले सुनना-सुनाना।	* संदर्भ साहित्य * स्फूर्तिगीतों का चार्ट * चुटकुलों का चार्ट * सी.डी. * डी.वी.डी.	* स्फूर्तिगीत सुनने में रुचि लेता है। * रुचि एवं ध्यानपूर्वक स्फूर्तिगीत, चुटकुले सुनाता है। * आकलनपूर्वक सुनन-सुनाने हेतु प्रवृत्त होता है। * सुनी हुई सामग्री पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर देता है।	* मौखिक कार्य, * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कृति
२.	नीतिकथा, भाषण सुनना-सुनाना। (परोपकार, स्त्री-पुरुष समानता सहिष्णुता पर आधारित)	* संदर्भ साहित्य * नीतिकथा चार्ट * महान विभूतियों के भाषण की सी.डी. डी.वी.डी.	* नीति कथा भाषण ध्यानपूर्वक सुनते हुए रुचि लेता है। * भावनाओं का समायोजन होता है। * महान विभूतियों के बताए हुए सन्मार्ग पर चलने की ओर उन्मुख होता है। * परोपकार, स्त्री-पुरुष समानता, समानता, सहिष्णुता का महत्व समझता है।	* मौखिक कार्य * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * कृति

अ क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
३.	सार्वजनिक स्थानों के आदेश–निर्देश, सूचनाएँ सुनना–सुनाना। (परिसर के संदर्भ में, जैसे–विद्यालय, अस्पताल, उद्यान, दर्शनीय स्थल, डाकघर आदि।)	* सार्वजनिक स्थानों की सूचनाएँ, आदेश–निर्देश के चार्ट। * सी.डी. * डी.वी.डी.	* विद्यार्थी सार्वजनिक स्थलों की सूचनाएँ आदेश, निर्देशों को ध्यानपूर्वक सुनता है। * इन सूचनाओं के महत्व को समझकर इनके पालन की ओर उन्मुख होता है। * सार्वजनिक स्थानों की स्वच्छता एवं संरक्षण का भाव विकसित होता है।	* प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य
४.	समाचारपत्र, रेडियो, दूरदर्शन सी.डी. आदि के माध्यम से शिक्षाप्रद कार्यक्रम सुनना–सुनाना– (कृषि संबंधी, नीतिपरक, विज्ञान, पर्यावरण संरक्षण, प्रदूषण आदि से संबंधित।)	* समाचारपत्र * रेडियो * दूरदर्शन * संगणक * सी.डी. आदि।	* समाचार पत्र, रेडियो आदि के माध्यम से शिक्षाप्रद कार्यक्रमों को ध्यानपूर्वक सुनने में रुचि लेता है। * उपरोक्त कार्यक्रमों का उचित आकलन करके इनकी महत्वपूर्ण बातों को जीवन में उतारने का प्रयास करता है।	* मौखिक कार्य * कृती * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण
५.	कविता, परिच्छेद में आए स्वर, व्यंजन, संयुक्ताक्षर का श्रवण के माध्यम से परिचय प्राप्त करना। १ से ७५ तक के अंकों को सुनना–सुनाना।	* संदर्भ साहित्य * कविता परिच्छेद का चार्ट। * अंक चार्ट।	* कविता, परिच्छेद में आए हुए स्वर, व्यंजन को ध्यानपूर्वक सुनता है। * कविता, परिच्छेद में आए स्वर, व्यंजन का आकलन करता है। * १ से ७५ तक के अंकों को ध्यानपूर्वक सुनता–सुनाता है। * सुने हुए अंकों का व्यवहार में उपयोग करता है।	* मौखिक कार्य * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * कृति

भाषाई कौशल/क्षेत्रः भाषण-संभाषण **कक्षा-सातवीं**

अ क्र.	अध्ययन-अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
	* **भाषाई खेल : ''बताओ तो वीर गिनूँ''** (घर परिवेश की वस्तुओं, त्योहार, मेला, कृषि प्रदर्शनी, सर्कस यातायात के साधन, मौसम, प्रदूषण पर्यावरण संरक्षण आदि संबंधी नाम, चित्र की पर्चियाँ एक जगह रखना। प्रत्येक विद्यार्थी द्‌वारा पर्ची उठाना। जिस विद्यार्थी के हाथ में जो पर्ची आएगी उसके बारे में बताना, वर्णन करना)	* घर, परिवेश की वस्तुओं, त्योहार मेला आदि के चित्र एवं नामों की पर्चियाँ।	* विद्यार्थी उत्साहपूर्वक खेल में सहभागी होता है। * अपने हाथ में आई पर्ची पर लिखे नाम या चित्र के बारे में वर्णन करता है। * विद्यार्थी में संभाषण करने हेतु आत्मविश्वास की वृद्‌धि होती है। * विद्यार्थी में सटीक अभिव्यक्ति विकसित होती है।	* मौखिक कार्य * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कृति
१.	गाँव, शहर, तहसील के महत्वपूर्ण स्थलों का परिचय बताना।	* मानचित्र, * गाँव, शहर आदि के दर्शनीय स्थल, नदियाँ, बाँध आदि का चार्ट।	* अपने गाँव, शहर, तहसील के बारे में आपस में चर्चा करता है। * अपने गाँव, शहर आदि के दर्शनीय स्थलों, महत्वपूर्ण बातों का वर्णन करता है। * नदियाँ, बाँध आदि से जल आपूर्ति के संदर्भ में चर्चा करने में आत्मविश्वास जग जाता है।	* मौखिक कार्य * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * कृति
२.	विद्‌यालयीन कार्यक्रम, प्रतियोगिता आदि के बारे में बताना।	* संदर्भ साहित्य * चार्ट	* विद्‌यालयीन कार्यक्रमों एवं प्रतियोगिता के बारे में चर्चा करता है।	* मौखिक कार्य * प्रात्यक्षिक * कृति

अ क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
	(राष्ट्रीय त्योहार, शिक्षणोत्सव, प्रदर्शनी, शिक्षक दिवस, बाल दिवस आदि)	* चित्र * फोल्डर * छायाचित्र	* वक्तृत्व, कथाकथन आदि प्रतियोगिताओं में सहभागी होता है। * संभाषण एवं मौखिक अभिव्यक्ति क्षमता विकसित होती है।	* निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन
३.	* नाट्यांश/संवाद की मौखिक प्रस्तुति करना। * दिए गए विषय पर भाषण देना– जैसे– जल प्रदूषण, वृक्षारोपण आदि ।	* संबंधित चार्ट * संदर्भ साहित्य	* उचित हाव–भाव, आरोह–अवरोह के साथ नाट्यांश की प्रस्तुति करता है। * दिए गए विषय पर भाषण की तैयारी करने हेतु संदर्भ साहित्य का उचित प्रयोग करता है। * आत्मविश्वास में वृद्धि होती है। * भाषण में मुहावरे, सुवचन आदि का प्रयोग करने की ओर उन्मुख होता है।	* प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * मौखिककार्य * कक्षाकार्य * कृति
४.	* गीत, कहानी की अभिनय एवं लय तथा उचित गति के साथ प्रस्तुत करना। * १ से ७५ तक के अंकों का शुद्ध, सही उच्चारण करना।	* गीत संग्रह * कहानी संग्रह * सी.डी. * डी.वी.डी. * अंक एवं अंकों का अक्षरों मे चार्ट * संदर्भ साहित्य	* गीत कहानी की प्रस्तुति में रुचि लेता है। * गीत, कहानी की उचित हाव–भाव, लय–ताल के साथ प्रस्तुति करता है। * भावनाओं का समायोजन होता है। * आत्मविश्वास में वृद्धि होती है। * ७५ तक के अंकों का सही उच्चारण एवं व्यवहार में उपयोग करता है।	* मौखिककार्य * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन * कृति

अ क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
५.	औपचारिक–अनौपचारिक बातचीत में शब्दों का मानक उच्चारण करना। (अनुनासिक, अनुस्वार, स्वर, संयुक्ताक्षर, विशेष वर्ण, विराम चिह्न आदि के संदर्भ में)	* शुद्ध शब्दों के चार्ट * विरामचिह्न आदि के चार्ट * सी.डी. * डी.वी.डी.	* विद्यार्थी मानक उच्चारण से अवगत होता है। * औपचारिक/अनौपचारिक बातचीत में मानक उच्चारण करता है। * उचित आरोह–अवरोह, तान–अनुतान के साथ संभाषण करता है। * सार्वजनिक स्थानों पर संभाषण करने हेतु प्रवृत्त होता है।	* मौखिककार्य * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * कृति * सहपाठी मूल्यांकन

भाषाई कौशल/क्षेत्र : वाचन

कक्षा–सातवीं

अ क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
	* **भाषाई खेल : शब्द संपदा** अलग–अलग बच्चों के गले में वर्ण कार्ड लटकाकर, उन्हें मिलाकर अर्थपूर्ण शब्द बनाना तथा वाचन करना।	* वर्ण कार्ड * शब्द चार्ट	* विद्यार्थी खेल में रुचि लेता है। * खेल के माध्यम से वर्ण एवं शब्द के वाचन करने की क्षमता विकसित होती है। * कौतूहल क्षमता का विकास होता है। * रचनात्मकता एवं निर्णयक्षमता का विकास होता है।	* प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * सहपाठी मूल्यांकन
१.	कविता, शौर्य कथा का वाचन करना। (प्रकृति, पर्यावरणसंबंधी कविताएँ)	* कविता चार्ट * शौर्य कथा चित्र, * कथा चार्ट * संदर्भ साहित्य	* हाव–भाव, लय, ताल के साथ कविता का वाचन करता है। * हाव–भाव उचित आरोह–अवरोह के साथ शौर्य कथा का वाचन करता है। * तनाव का समायोजन होता है। * भावनाओं का समायोजन होता है। * साहस एवं निर्णय क्षमता में वृद्धि होती है। * वाचन प्रतियोगिता में सहभागी होता है। * पर्यावरण संरक्षण के प्रति सजग होता है।	* कृति * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन
२.	ऐतिहासिक स्थलों की जानकारी का प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप में वाचन करना।	* ऐतिहासिक स्थलों का चित्र चार्ट * ऐतिहासिक स्थलों की सूचनाओं का चार्ट	* ऐतिहासिक स्थलों की जानकारी, सूचना का प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से वाचन करता है।	* प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कृति * कक्षाकार्य

अ क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
		* मानचित्र * महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थलों के चित्र तथा महापुरुषों के चित्र	* विद्यार्थी में अपनी सांस्कृतिक विरासत के प्रति आदरभाव एवं आत्मीयता जागृत होती है। * ऐतिहासिक स्थलों के संरक्षण की भावना विकसित होती है। * आदर्श वाचन प्रतियोगिता में सहभागी होता है। * निर्णयक्षमता एवं आत्मविश्वास में वृद्धि होती है।	* सहपाठी मूल्यांकन
३.	घटना, प्रसंग, त्योहारों के बारे में उपलब्ध जानकारी का वाचन करना। (भूकंप, बाढ़, दुर्घटना, शिक्षक दिवस, बालिका दिवस, महाराष्ट्र दिवस, स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस आदि)	* संदर्भ चित्र, * चार्ट	* घटना, प्रसंग, त्योहार संबंधी जानकारी का वाचन करने में रुचि लेता है। * शब्द संपत्ति का विकास होता है। * आपदा व्यवस्थापन के प्रति जागृत होता है। * राष्ट्रीय एकात्मता का भाव विकसित होता है।	* मौखिक कार्य * कृति * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन * उपक्रम
४.	* विराम चिह्नोंसहित आरोह–अवरोह के साथ संवाद, कथा आदि का वाचन करना। * १ से ७५ तक के अक्षरों में लिखे अंकों का वाचन करना।	* विराम चिह्नयुक्त परिच्छेद का चार्ट * विराम चिह्नों सहित संवाद कथा का चार्ट।	* विरामचिह्न युक्त संवाद, कथा के वाचन में रुचि लेता है। * शुद्ध स्पष्ट वाचन की ओर प्रवृत्त होता है। * वाचन के संदर्भ में आत्मविश्वास बढ़ता है।	* मौखिक कार्य * कृति * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन

अ क्र.	अध्ययन-अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
			✻ पाठ्येतर साहित्य पढ़ने में रुचि बढ़ती है। ✻ अंकों का अपने व्यावहारिक जीवन में उपयोग करता है। ✻ शब्द संपदा का विकास होता है। ✻ पूछे गए छोटे-छोटे प्रश्नों के उत्तर देता है।	
५.	वाचन : पूरक पठन साहित्य का मौन वाचन, मुखर वाचन, अनुवाचन करना। (अनुवाचन, मुखर वाचन (प्रकट वाचन), मौन वाचन के अंतर को समझना तथा उसकी बारीकियों से अवगत करना)	✻ पूरक पठन साहित्य	✻ पूरक पठन साहित्य का रुचिपूर्वक मौन वाचन करता है। ✻ पाठ्येतर साहित्य पढ़ने में रूझान बढ़ता है। ✻ पठित साहित्य पर आधारित पूछे गए प्रश्नों का उत्तर देता है और प्रश्न पूछता है। ✻ अवधान क्षमता का विकास होता है। ✻ शब्द संपत्ति का विकास होता है।	✻ कृति ✻ प्रात्यक्षिक ✻ निरीक्षण ✻ कक्षाकार्य ✻ सहपाठी मूल्यांकन

भाषाई कौशल/क्षेत्र : लेखन

कक्षा–सातवीं

अ क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
	* **भाषाई खेल** : ''देखो झाँकी वाक्यों की'' : शब्दों का सही क्रम लगाकर अर्थपूर्ण वाक्य लिखना। जैसे : [लड़का] [अन्नदाता] [हैं] [है] [समय] [काल] [भी] [ही] [संपत्ति] [किसान] उत्तर : [समय] [ही] [संपत्ति] [है।]	* शब्द चार्ट	* विद्यार्थी खेल में सहभागी होकर रुचिपूर्वक अर्थपूर्ण वाक्य लिखता है। * रचनात्मकता एवं निर्णयक्षमता विकसित होती है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन
१.	**अनुलेखन, सुलेखन, श्रुतलेखन करना।** (वाक्य, परिच्छेद)	* संदर्भ साहित्य * सुवचन की वाक्य पट्टी	* अनुलेखन, सुलेखन, श्रुतलेखन करता है। * शुद्ध लेखन एवं रचनात्मकता की ओर उन्मुख होता है।	* कृति * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य
२.	**शुद्ध लेखन करना :** * कविता, कहानी आदि * अंकों का अक्षरों में लेखन (एक से) पचहत्तर तक (क्रमिक लेखन अपेक्षित नहीं।)	* चित्र कार्ड * अंक चार्ट	* कहानी, पत्र, निबंध, कविता का शुद्ध लेखन करता है। * सृजनशीलता का विकास होता है। * देवनागरी हिंदी में अंकों का शुद्ध लेखन करता है।	* कृति * स्वाध्याय * कक्षाकार्य

अ क्र.	अध्ययन-अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
३.	विराम चिह्न, कारक चिह्नयुक्त लघु परिच्छेद लेखन करना। (परिच्छेद विरामचिह्न व कारक चिह्न रहित हो।)	* विराम चिह्नों के चार्ट * कारक एवं उनके चिह्नों के चार्ट	* विद्यार्थी विराम चिह्नों एवं कारक चिह्नों से परिचित होता है। * शुद्ध एवं वर्तनी के अनुसार लिखने हेतु प्रवृत्त होता है।	* लेखन कृति * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * स्वाध्याय * कक्षाकार्य
४.	गद्य आकलन : (गद्य : पठित-अपठित)	* परिच्छेद चार्ट * संदर्भ साहित्य	* दिए गए गद्यांश का वाचन करते हुए उसका आकलन करता है। * आकलन के साथ पुछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखता है। * वाक्य रचना की क्षमता का विकास होता है। * निर्णयक्षमता का विकास होता है।	* कृति * कक्षाकार्य * स्वाध्याय * सहपाठी मूल्यांकन * सहपुस्तक कसौटी
५.	स्वयं प्रेरणा से मुद्दों के आधार पर पत्र, कहानी, निबंध लेखन करना।	* पत्र, कहानी, निबंध के मुद्दों के चार्ट * संदर्भ साहित्य	* कहानी, निबंध आदि के माध्यम से अपने भावों को लिखित रूप में अभिव्यक्त करने के हेतु अग्रसर होता है। * लेखन में मुहावरों का उचित उपयोग करता है। * कहानी, निबंध, पत्र आदि के लेखन में विराम चिह्नों एवं कारक चिह्नों का उपयोग करता है। * भावनाओं का समायोजन होता है।	* कृति * कक्षाकार्य * स्वाध्याय * सहपाठी मूल्यांकन * सहपुस्तक कसौटी

भाषाई कौशल/क्षेत्र : क्रियात्मक व्याकरण **कक्षा–सातवीं**

अ क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
	* **भाषाई खेल : चलो नाम के गाँव** **कृति** : फलक/चार्ट पर सभी बच्चों के नाम लिखकर उनमें से उपसर्ग और प्रत्यय वाले नाम अलग करना, नाम का अर्थ बताना। **जैसे** : सुयश, विजय, नम्रता।	नाम का चार्ट। उपसर्ग एवं प्रत्यय का चार्ट।	* विद्‌यार्थी रुचि पूर्वक खेल में सहभागी होता है। * नाम में आए हुए उपसर्ग एवं प्रत्यय को पहचानता है। * अपने नाम का अर्थ समझकर आनंदित होता है। * खेल के माध्यम से तनाव का समायोजन होता है।	* प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कृति * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन
१.	पुनरावृत्ति : (शब्दयुग्म, शब्दभेद (स्थूल परिचय) मुहावरे, वर्तनी, विरामचिह्‌न आदि।) शब्दभेद की जानकारी प्राप्त करना (विकारी शब्द : संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया उपभेदों सहित)	* संदर्भ साहित्य शब्दयुग्म चार्ट * क्रिया के काल के चार्ट * विराम चिह्‌न चार्ट आदि। * विकारी शब्द के उपभेदों सहित चार्ट। * विकारी शब्दों से युक्त वाक्य पट्टी। * विकारी शब्दों से युक्त परिच्छेद चार्ट	* पिछली कक्षा में पढ़े हुए शब्दयुग्म, शब्दभेद, मुहावरे, विराम चिह्‌न आदि का प्रयोग करता है। * भाषा के विविध व्याकरणिक प्रयोग से अवगत होता है। * भाषा प्रयोग के स्तर पर आत्मविश्वास में वृद्‌धि होती है। * विकारी शब्दों से परिचित होता है। * संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया के उपभेदों से परिचित होता है। * सामान्य बातचीत और लेखन में विकारी शब्दों का उचित उपयोग करता है।	* प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * मौखिक कार्य * कृति * सहपाठी मूल्यांकन * कक्षाकार्य * स्वाध्याय

अ क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
			* विश्लेषण एवं वर्गीकरण की क्षमता विकसित होती है।	* कृति–लिखित–मौखिक * सहपाठी मूल्यांकन
२.	* शब्दों के लिंग, वचन का परिवर्तन एवं उचित प्रयोग करना। * रचनानुसार वाक्य के प्रकारों का उपयोग करना।	* रचनानुसार वाक्य प्रकार का चार्ट, स्त्रीलिंग, पुल्लिंग * शब्दों का चार्ट/सूची। * एकवचन, बहुवचन शब्दों के चार्ट एवं सूची। * शब्दों के लिंग, वचन परिवर्तन के चार्ट।	* शब्दों के लिंग, वचन से अवगत होता है। * शब्दों के लिंग और वचन का परिवर्तन करते हुए संभाषण एवं लेखन में उचित प्रयोग करता है। * संभाषण एवं लेखन में रचनानुसार वाक्य के प्रकारों का उचित प्रयोग करता है। * शब्दों के विविध रूपों से परिचित होकर व्यवहार में उनका प्रयोग करता है। * शुद्‌ध एवं मानक लेखन की ओर प्रवृत्त होता है।	* लेखन कृति * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * स्वाध्याय * सहपाठी मूल्यांकन * सहपुस्तक कसौटी * प्रकल्प
३.	काल के भेदों का वाक्यों में प्रयोग करना : (सामान्य, अपूर्ण, पूर्ण)	* काल भेद के चार्ट * काल के भेदों के अनुसार वाक्य पट्‌टी	* काल एवं उनके उपभेदों से अवगत होता है। * भाषण–संभाषण में काल एवं उनके भेदों का प्रयोग करता है। * वर्गीकरण एवं विश्लेषण की क्षमता विकसित होती है।	* कृति * कक्षाकार्य * स्वाध्याय * सहपाठी मूल्यांकन

अ क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
४.	* **विराम चिह्न :** संयोजक चिह्न, विवरण चिह्न, कोष्ठक चिह्न का उपयोग करना।	* विरामचिह्न संकेत एवं नाम के चार्ट * विराम चिह्न रहित वाक्य पट्टी * विराम चिह्न रहित अनुच्छेद चार्ट।	* विद्यार्थी विराम चिह्न, विवरण चिह्न, संयोजक चिह्न, कोष्ठक चिह्न से अवगत होता है। * विराम चिह्नों के अनुसार उचित हाव–भाव, आरोह–अवरोह के साथ संभाषण, वाचन एवं लेखन करता है। * विश्लेषण क्षमता का विकास होता है। * अनुशासित, नियोजित, क्रमबद्ध जीवन जीने के लिए प्रवृत्त होता है।	* प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * स्वाध्याय * सहपाठी मूल्यांकन * सहपुस्तक कसौटी
५.	वर्तनी के अनुसार शुद्ध लेखन करना। (शुद्ध–अशुद्ध शब्द, कारक चिह्नों का सही प्रयोग, विराम चिह्न आदि।)	* शब्द चार्ट * संज्ञा के साथ कारक चिह्नों के प्रयोग के चार्ट * सर्वनाम के साथ कारक चिह्नों के प्रयोग के चार्ट। * विराम चिह्नों के चार्ट।	* संभाषण, वाचन, लेखन में शब्दों के मानक रूप का प्रयोग करता है। * कारक चिह्नों के उचित प्रयोग से अवगत होता है। * संभाषण, वाचन, लेखन में संज्ञा और सर्वनाम के साथ कारक विभक्ति का उचित उपयोग करता है। * वर्तनी के नियम समझते हुए विराम चिह्न–युक्त शुद्ध लेखन करता है। * अनुशासन की प्रवृत्ति विकसित होती है।	* कृति * कक्षाकार्य * स्वाध्याय * सहपाठी मूल्यांकन

भाषाई कौशल/क्षेत्र : व्यावहारिक सृजन **कक्षा–सातवीं**

अ क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
	* **भाषाई खेल : 'सलाम–नमस्ते'** (विद्यार्थियों के दो गुट बनाना। एक गुट द्वारा नमस्ते, प्रणाम, आशीष, स्वागत, सलाम, सैल्यूट आदि कृति करना। दूसरे गुट द्वारा इस कृति को पहचानकर अर्थ बताना कृति करना।	* संदर्भित चार्ट	* विद्यार्थी 'सलाम–नमस्ते' खेल में रुचि लेता है। * बड़ों के प्रति आदरभाव समवयस्कों के लिए मित्रता का भाव विकसित होता है। * सुसंस्कारित होता है। * सर्व धर्म समभाव विकसित होता है।	* प्रात्यक्षिक * कृति * निरीक्षण
१.	**अनुवाद :** मातृभाषा के विज्ञापन और परिच्छेद का हिंदी में अनुवाद करना। (मौखिक एवं लिखित)	* संदर्भ साहित्य * मातृभाषा के विज्ञापनों की वाक्य पट्टी और चार्ट। * विज्ञापन, परिच्छेद का चार्ट	* मातृभाषा के विज्ञापनों एवं परिच्छेदों का अनुवाद करने में रुचि लेता है। * मातृभाषा एवं हिंदी में सहसंबंध स्थापित करता है। * अपनी मातृभाषा एवं हिंदी में विशिष्ट बातों में समानता एवं भिन्नता से परिचित होता है। * मातृभाषा के साथ–साथ हिंदी के प्रति आदरभाव विकसित होता है।	* कक्षाकार्य * स्वाध्याय
२.	**व्यावसायिक लेखन :** घोष वाक्य एवं विज्ञापन लेखन करना। (कृषि तथा अन्य व्यावसायिक क्षेत्रों से संबंधित)	* कृषि संबंधी एवं परिसर के अन्य व्यावसायियों के चित्र चार्ट	* परिसर के कृषक आदि व्यवसायियों से परिचय प्राप्त करता है। * व्यवसायियों से सहसंबंध प्रस्थापित करता है।	* कृति–लिखित * निरीक्षण * कक्षाकार्य * स्वाध्याय

अ क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
		* विज्ञापन एवं घोष वाक्य की पट्टी	* कृषक एवं अन्य व्यवसायियों के प्रति आदर भाव एवं आत्मीयता पैदा होती है। * अपने भावी जीवन के व्यवसाय के प्रति रुझान विकसित होता है। * आत्मविश्वास एवं निर्णय क्षमता का विकास होता है। * घोषवाक्य, व्यवसायियों की जानकारी की कतरनों का संग्रह करता है। * समय–समय पर उसके लेखन में प्रयोग करता है।	* सहपाठी मूल्यांकन
३.	**नाट्यकला :** * मंचीय जानकारी प्राप्त करना, मंचीय व्यवस्थापन संबंधी विभिन्न गतिविधियों की साभिनय प्रस्तुति करना। * छोटी कहानी का संवाद में रूपांतरण करना। (मौखिक–लिखित)	मंच का चित्र चार्ट। मंचीय विषयों के नाम की सूची। कथा चार्ट। संदर्भ साहित्य	* परिसर के बाल कलाकार आदि से चर्चा करके जानकारी प्राप्त करता है। * मंच से संबंधित बातों की जानकारी प्राप्त करता है। * मंच से संबंधित व्यवस्थापन विषयों का रुचि के साथ अभिनय करता है। * छोटी–छोटी कहानियों का संवादों में रूपांतरण करता है। * निर्णय क्षमता का विकास होता है। * कलाकारों के प्रति आत्मीयता बढ़ती है। * अपने भावी जीवन के व्यवसाय के चयन हेतु अग्रसर होता है। * देखे हुए सांस्कृतिक कार्यक्रम, विविध गुणदर्शन कार्यक्रमों पर चर्चा करता है।	* कृति * प्रात्यक्षिक * कक्षाकार्य * स्वाध्याय * सहपाठी मूल्यांकन * सहपुस्तक कसौटी * प्रकल्प

अ क्र.	अध्ययन-अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
४.	**लिप्यंतरण** : (देवनागरी के विज्ञापनों का रोमन (अंग्रेजी) लिपि में, अंग्रेजी विज्ञापनों का देवनागरी (हिंदीं) में)	हिंदी विज्ञापन पट्टियाँ, चार्ट, अंग्रेजी विज्ञापनों की पट्टियाँ,	* हिंदी विज्ञापनों का रोमन लिपि में लेखन करता है। * अंग्रेजी विज्ञापनों का देवनागरी लिपि में लेखन करने में रुचि लेता है। * लिपि परिवर्तन में भाषा की वर्तनी को समझते हुए परिवर्तन करता है। * विज्ञापनों के महत्व को समझता है।	* प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * स्वाध्याय * सहपाठी मूल्यांकन * प्रकल्प
५.	**सांकेतिक चिह्न**-मुद्रित शोधन का पुनरावर्तन * शब्दों के लघुरूप * पुलिस, सेना, स्काउट गाइड, पथ सुरक्षा दल, छात्रसेना के सांकेतिक चिह्नों का लेखन	* मुद्रित शोधन के चिह्न एवं नाम के चित्र चार्ट * पुलिस, सेना, स्काउट गाइड, पथ सुरक्षा दल, राष्ट्रीय छात्र सेना के चिह्न एवं नाम के चित्र चार्ट।	* पिछली कक्षा में पढ़े हुए मुद्रित शोधन के चिह्नों का दूसरे विद्यार्थियों द्वारा लिखित कार्य में सुधार हेतु उपयोग करता है। * शब्दों के लघुरूपों (संक्षिप्त) से परिचित होता है। * पुलिस, सेना, स्काउट गाइड, पथ सुरक्षा दल, राष्ट्रीय छात्र सेना के सांकेतिक चिह्न, उनके अर्थ एवं नाम से परिचित होता है। * शब्द संपदा का विकास होता है। * राष्ट्रप्रेम की भावना जागृत होती है। * अपनी पाठशाला एवं अपने परिसर का मानचित्र बनाने हेतु प्रारूप बनाता है।	* प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन * प्रकल्प